B. A. -I (HISTORY) HONOURS, 2020.

NOTES PREPARED BY →

DR. MANITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
HAJIPUR, BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

भारत पर अरब आक्रमण के कारण एवं प्रभाव →

हजरत मुहम्मद की मृत्यु (632 ई०) भारत और अरब के बीच तीव्र गति से संबंध स्थापित हुए, सिंध के इतिहास के संबंध में महत्वपूर्ण सूचना का स्रोत अली अहमद की चचनामा तथा अलबिलादुरी की फतुहत-बुलदान से प्राप्त होती है।

इन दोनों ग्रंथों से स्पष्ट होता है कि सिंध का राज्य अत्यंत ही विस्तृत राज्य था तथा मुलतान भी इसमें शामिल थी। सिंध की राजधानी अलोर थी।

अली अहमद (अबुबक्र) के चचनामा से स्पष्ट होता है कि यहाँ ब्राह्मणवंशीय शासक दाहिर शासन करता था। दाहिर के पहले यहाँ रायवंश का शासन था। दीवाजीराय, सिंहरस एवं रायसहीन जैसे शासक यहाँ शासन कर चुके थे। रायसहीन को राय साहसी-II के नाम से जाना जाता है। चच राय साहसी-II का मंत्री चच था। जिसने राजा के विधवा से विवाह करके स्वयं सत्ता प्राप्त कर ली।

चच ने ~~सिंध~~ कश्मीर क्षेत्र में सिंध का विस्तार किया। चच के पश्चात चन्दर शासक बना। इसी चन्दर का भतीजा दाहिर था। इसी दाहिर के शासनकाल में सिंध पर 712 ई० में अरब आक्रमण संभव हुए।

Scanned with CamScanner

भारत पर अरब आक्रमण →

712 ई० में मुहम्मद - बिन - कासिम के द्वारा संभव हुआ। परंतु 636 ई० से ही अरब एवं भारत के बीच व्यापारिक क्रिया-कलापों के साथ - साथ लूट - पाट की घटना भी प्रारंभ हुई। क्योंकि 636 ई० में ओबेदुल्ला के नेतृत्व में थाना एवं खम्भात पर आक्रमण करके लूट - पाट की घटना को अंजाम दिया गया।

643 ई० में चच के द्वारा देवल के सेनापति नरेन सिंह की हत्या कर दी। परंतु अरब पर वास्तविक आक्रमण 711 ई० - 12 ई० के बीच हुआ, जब मुहम्मद - बिन कासिम ने सिंध पर अधिकार कर लिया और सिंध से दाहिर का शासन सदैव के लिए समाप्त हो गया।

दाहिर के पश्चात सिंध का शासक जयसिंह हुआ। जिसने आगे चलकर इस्लामधर्म स्वीकार कर लिया। परिणामस्वरूप सिंध एवं मुल्तान के लगभग संपूर्ण क्षेत्रों पर अरबों का अधिकार हो गया।

मुहम्मद - बिन - कासिम के मृत्यु के पश्चात जुनैद ने राजस्थान तथा गुजरात के कुछ भाग पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयास किया। आगे चलकर, प्रतिहार शासक नागभट्ट - I ने सिंध के आगे अरबों के विस्तार को पूरी तरह से बाधित कर दिया।

कन्नौज के शासक यशोवर्मन तथा कश्मीर के शासक ललितादित्य मुक्तापिड के द्वारा भी ताज़िक (अरब) को पराजित किया गया।

चुनैद का उत्तराधिकारी तमीम था। इसी के समय सिंध पर से अरबियों का प्रभाव तेज़ी से घटना प्रारंभ हुआ। अल-बिलादुरी की रचना से स्पष्ट होता है कि अरबों ने अपनी सुरक्षा के दृष्टिकोण से सिंध में अल-महफूज नामक नगर का निर्माण करवाया था।

Scanned with CamScanner